सेम. - 3 , MJ - 3

हिन्दी नाटक का उद्‌भव और विकास

भूमिका :-

भारतीय साहित्य में नाटकों की एक समृद्ध परंपरा है। नाटक समाज की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था को सजीव रूप में चित्रित करता है। नाटक की परंपरा देववाणी संस्कृत से चली आ रही है। संस्कृत के सबसे प्राचीन आचार्य भरतमुनि है जिन्होंने 'नाट्यशास्त्र' की रचना की जिसे 'पंचमवेद' और 'नाट्यवेद' के नाम से जानते हैं। नाटक के संबंध में भरतमुनि ने लिखा/कहा है- "न ऐसा कोई ज्ञान है, न शिल्प है, न विद्या है न ऐसी कोई कला है, न कोई योग है, न कोई कार्य ही है जो इस नाटक/नाट्य में प्रदर्शित न किया जाता हो।" आगे की परंपरा यानि संस्कृत की प्रौढ़ अवस्था में कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' संसार के श्रेष्ठ नाटकों में-से एक है। इस युग में नाटकों की काव्यात्मकता की अधिकता है। ये नाटक रंगमंच को दर्शाने में भी कार्य करते हैं। अत: हिन्दी नाटक का उद्‌भव यही से हुआ।

हिन्दी नाटक का उद्‌गम :-

सही अर्थों में अगर देखा जाए तो हिन्दी नाटक का उद्‌गम पारसी रंगमंच के समय में हुआ था। इसी क्रम में नाटकों की रचना ब्रज भाषा में भी हुई। जैसे - महाराज यशवंत सिंह कृत ~~अनुदित~~ नाटक 'प्रबोध चंद्रोदय', नेवाज कृत 'शकुन्तला नाटक' आदि ये सभी नाटक मौलिक हैं।

I'm told I'm very charming when people do what I want.- Steven Brust.

भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी के आरंभिक नाटक में अपने पिता गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास' कृत 'नहुष' नाटक को प्रथम माना है। द्वितीय मे राजा लक्ष्मण सिंह कृत शकुन्तला को, तृतीय में ग्वुट की रचना 'विद्यासुंदर' को तथा चतुर्थ मे श्री निवासदास कृत 'तप्तासंवरण' को माना है।

हिन्दी नाटक का विकास —

हिन्दी नाटकों की परंपरा भारतेंदु युग से आरंभ होती है और छायावाद युग मे यौवन को प्राप्त करती है। छायावाद युग को जयशंकर प्रसाद के नाटकों से हिन्दी नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। हिन्दी के प्रथम नाटक को लेकर विद्वानों में मतभेद है —

डॉ. दशरथ ओझा - देल्हण कृत गय सुकुमार रास (अपभ्रंश) को पहला नाटक मानते हैं।

डॉ. गणपति चंद्र गुप्त - विद्यापति कृत गोरक्ष विजय (मैथिली)

आ० रामचंद्र शुक्ल - महा विश्वनाथ सिंह कृत आनंद रघुनंदन (ब्रज)

भारतेंदु हरिश्चन्द्र - गोपालचंद्र कृत नहुष (ब्रजभाषा) को।

इसके अलावे गणेश कवि का 'प्रद्युम्न-विजय (1863) एक तो समग्र रूप में पद्यबद्ध है और दूसरे यह किसी संस्कृत नाटक का अनुवाद प्रतीत होता है। हिन्दी नाटक का विकास-क्रम जब हम देखते हैं तो पाते हैं कि नाटकों का विकास साहित्य में आकर साहित्य का भंडार भरने का कार्य किया।

हिन्दी नाटक के विकास क्रम को हम निम्न रूप में वर्गीकृत करते हैं—

(क) प्रसाद पूर्व नाटक
(ख) प्रसाद युगीन नाटक
(ग) प्रसादोत्तर नाटक ।

(क) प्रसाद पूर्व नाटक :—

हिन्दी नाटकों का आरंभ भारतेंदु-युग से प्रारम्भ होता है। भारतेंदु-युग के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चन्द्र हैं। इनका पहला नाटक 'विद्यासुंदर' जो 1868 ई० में प्रकाशित होता है। वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रवर्तित रामलीला की लोकप्रियता के साथ-साथ लीला नाटकों का भी आरम्भ हुआ। इनके नाटकों में समाज-सुधार और युगीन नवजागरण के भाव दिखाई पड़ते हैं। इन्होंने अपने युग के विविध धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि प्रश्नों और समस्या को अपने प्रहसनों एवं नाटकों में रूपायित किया है और पुनरुत्थान मूलक समाधान प्रस्तुत किया। भारतेंदु ने भारत-दुर्दशा, अँधेर नगरी, सत्य हरिश्चन्द्र, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु जैसे मौलिक एवं अनुदित नाटकों की रचना की। अम्बिका दत्त व्यास कृत - लवंगी, देवकीनंदन खत्री कृत - सीताहरण, शीतला-प्रसाद त्रिपाठी कृत - रामचरितावली, श्रीनिवासदास कृत प्रहलाद चरित्र, बालकृष्ण भट्ट कृत - नल दमयंती-स्वंयवर जैसे नाटक लिखे गए। जो समाज सुधार की भावना से प्रेरित होकर वर्तमान समाज की दशा का वर्णन किया।

इसी समय भारतेंदु युग के बाद द्विवेदी युग आता है। इस युग में नाट्य की स्थिति सबसे कम समृद्ध रहा है। जहाँ भारतेंदु युग में साहित्यिक नाटकों की लोकप्रियता रही वहीं द्विवेदी युग में सामाजिक एवं राजनीतिक नाटकों की लोकप्रियता रही। इस युग के प्रमुख नाटककारों में नाटक प्रमुख रूप से - राधा-चरण गोस्वामी कृत 'श्रीदामा', गंगा प्रसाद गुप्त कृत वीर जयमाल, भगवती प्रसाद कृत वृद्ध विवाह, नारायण प्रसाद कृत बेताब, बद्रीनाथ भट्ट कृत चुंगी की उम्मीदवारी।

(ख) प्रसाद युगीन नाटक :-

जयशंकर प्रसाद इस युग के केंद्र में हैं। साथ ही, नाटक के केन्द्र में भी प्रसाद की ही भूमिका रही। इसके आविर्भाव के साथ हिन्दी नाट्य साहित्य के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ता है। प्रसाद ने रोमांटिकधर्मी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक नाटकों का सृजन कर हिन्दी नाटक का नया विकास किया। जिन जीवन प्रसंगों के प्रति इतिहास मौन रहता है, उन्हें वे अपनी कल्पना से रूप देते थे। प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीयता की भावना, नारी-सम्मान, समाज की कुरीतियों का खंडन देखने को मिलता है। इनके प्रमुख नाटकों में विशाख, अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, एक घूंट आदि प्रमुख हैं। इसी समय कृपानाथ मिश्र कृत मणि गोस्वामी, लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत सन्यासी, मुक्ति का रहस्य आदि

(ग) प्रसादोत्तर नाटक :—

प्रसाद के बाद नाटक पूरी तरह चरम सीमा पर पहुँच गया। जहाँ प्रसाद युग में नाटक यौवन अवस्था में था, वहाँ इसके बाद नाटक पूरी तरह से रंगमंचीय बन चुका था। प्रसाद के बाद अन्य प्रमुख नाटककारों में कवि उदयशंकर भट्ट कृत 'विक्रमादित्य, मुक्तिपथ, शक विजय', हरिकृष्ण प्रेमी कृत 'प्रतिशोध, स्वप्नभंग, आहुति', लक्ष्मीनारायण कृत 'अशोक, दशाश्वमेध' उल्लेखनीय है।

प्रसादोत्तर नाटक में ही साठोत्तर नाटक आता है जहाँ हिन्दी में रंगनाटक लेखन की एक नयी शुरुआत हुई। प्रसाद युग व प्रसादोत्तर युग में नाटक महज किताब बन कर रह गयी थी, इस दौर में नाटक के आलेख और रंगमंच के बीच घनिष्ठ संबंध रहा। इस समय के नाटककारों ने ब्राह्य पदार्थ / यथार्थ की जगह आंतरिक यथार्थ को नाटक में रूपायित किया। मोहन राकेश के नाटक - 'आषाढ का एक दिन, लहरों का राजहंस, आधे-अधूरे', सुरेन्द्र वर्मा के नाटक - 'द्रौपदी, आठवाँ सर्ग', डॉ. शंकर शेष का 'एक और द्रोणाचार्य', नरेन्द्र कोहली का 'शम्बुक की हत्या' आदि रचनाएँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जगदीशचन्द्र माथुर का 'कोणार्क' नाटक, धर्मवीर भारती का नाटक 'अंधायुग' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण नाटक है। भुवनेश्वर प्रसाद का 'तांबे के कीड़े', विपिन अग्रवाल के नाटक - 'तीन अपाहिज, लोटन, मौत एक कुत्ते की' आदि प्रमुख हैं। इस समय दो तरह से नाटकों की रचना होने लगी — जनवादी नाटक, नुक्कड़ नाटक।

Any man or institution that tries to rob me of my dignity will lose. - Nelson Mandela

जनवादी नाटक सन 1942-1943 ई. में कम्युनिस्ट विचार-धारा से जुड़े विचारकों और कलाकारों ने जन नाट्य संघ (इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन) की स्थापना की। हिन्दी जन नाट्य मंच के कुछ महत्वपूर्ण नाटकों में सज्जाद जहीर कृत 'तूफान से पहले', हबीब तनवीर कृत 'शतरंज के मोहरे', भीष्म साहनी कृत 'भूतगाड़ी' है।

नुक्कड़ नाटक सातवें दशक में हिन्दी नाट्य साहित्य में नुक्कड़ नाटकों का उदय हुआ। भारतीय रंगमंच के क्षेत्र में नुक्कड़ के ढंग का प्रयोग का श्रेय बादल सरकार को है। बादल सरकार ने जुलूस, हत्यारे, औरत, मशीन आदि से प्रसिद्ध नुक्कड़ों नाटकों की रचना की।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार से नाटकों का दौर भारतेंदु युग से शुरू होकर जनमानस पर राष्ट्र चेतना, स्त्री-दशा, सामाजिक खंडन पर रचना कर पूरे साहित्य जगत में इसका स्थान सर्वोपरि कर दिया गया ताकि इस के माध्यम से जन-जन तक संदेशा पहुँचाया जा सकता है। जन-जन को जागृत करने के लिए नाटक एक दृश्य काव्य के रूप काम करता है। जिसमें विभिन्न घटनाओं को ~~समूह~~ जन समुदाय के बीच में प्रकाशित किया जाता है।